भगवान जी आए इत, जागवे को तत्पर।
हम उठसी भेले सबे, जब जासीं हमारे घर।। ३४ ।।

अक्षर भगवान भी यहां पर हमारे साथ जागने के लिए आए हैं और हम दोनों एक साथ ही जागृत होंगे और अपने-अपने घर को जाएंगे।

प्रकास कह्यो मैं रास को, एह सुन्यो तुम सार।
अब महामती कहें सो सुनो, दया को विस्तार।। ३५ ।।

हे साथजी! अखण्ड रास की लीला की हकीकत को मैंने बताया जो सबसे श्रेष्ठ हकीकत है और इसका सार आपने सुना है। अब श्री महामति श्री राजजी महाराजजी की दया के विस्तार का वर्णन करती हैं, उसे सुनो।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५७० ।।

दया को प्रकरण

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड।
सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूं।।टेक।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं कि मेरे पिया ने इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जो दया की है, वह ब्रह्माण्ड में समाती नहीं है। अपने धनी के यह एहसान मैं कैसे भुला सकती हूं जो मेरे हाथों से ही उन्होंने सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड कराया है। हे सुन्दरसाथजी! पिया की कृपा का मैं कैसे बखान करूं?

अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर।। २ ।।

धनी की कृपा धनी के स्वरूप जैसी ही अखण्ड सागर के समान है जिसमें मैं लिप्त हो गई (हिल-मिल गई)। धनी की कृपा के सागर में माया की एक बूंद भी नहीं है।

दया मुकट सिर छत्र चंवर, दया सिंघासन पाट।
दया सबों अंगों पूरन, सब हुओ दया को ठाट।। ३ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर का सिंहासन है, जिस पर उन्होंने मुझे बिठाया है। उनकी मेहर का ही मुकुट मेरे सिर पर शोभायमान है। मेहर का ही मेरे सिर पर छत्र है और मेहर के ही चंवर मेरे ऊपर डुलाए जाते हैं। इस प्रकार से मेरे सब अंगों में भी उनकी मेहर भरी है और सब मेहर का ही ठाट-बाट है।

अब दया गुन मैं तो कहूं, जो कछू अंतर होए।
अंगीकार करी अंगना, सो देखे साथ सब कोए।। ४ ।।

अब राजजी महाराज की कृपा का वर्णन मैं तब करूं जब मेरे और उनके बीच में कोई अन्तर हो। उन्होंने मुझे अपनी अंगना के रूप में स्वीकार कर लिया है। इसे सब सुन्दरसाथ जान रहे हैं।

पल पल आवे पसरती, न पाइए दया को पार।
दूजा तो सब मैं मापिया, पर होए न दया को निरवार।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज की मेहर पल-पल में फैलती है, इसलिए इस मेहर का शुमार नहीं है। बाकी तो सभी चीजों को मैंने शुमार में ले लिया पर धनी की मेहर का मैं निर्णय नहीं कर सकी।

Nijanand App

एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत।
अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत।। ६ ।।

इतने दिन तक हमने घर के बीच में धनी की तारतम वाणी को छिपाकर रखा। अब जागृत बुद्धि अपनी तरफ खींच रही है और इसलिए यह छिपी हुई वाणी जाहिर हो रही है।

सब्द कोई कोई सत उठे, सो भी गए असतमें भिल।
सत असत काहू न सुध, दोऊ रहे हिल मिल।। ७ ।।

इस संसार में किसी-किसी ने पार की वाणी बोली भी तो वह भी अज्ञान वश झूठे संसार में मिल गई। इस झूठे संसार में सच और झूठ ऐसे मिल गए कि किसी को सत् (परब्रह्म) की सुध ही नहीं रही।

अब दूर करूं असत को, जाहेर करूं सत जोत।
गोप रही थी एते दिन, सो अब होत उद्दोत।। ८ ।।

अब झूठी माया को दूर करके सत् (परब्रह्म) के ज्ञान को जाहिर करती हूं। यह ज्ञान जो इतने दिन तक छिपा रहा अब सब में प्रकट हो रहा है।

असत भी करना अखंड, करके सत प्रकास।
सनंध सब समझाए के, करूं तिमर सब नास।। ९ ।।

इस झूठे ब्रह्माण्ड को भी परब्रह्म की पहचान कराकर अखण्ड करना है, इसलिए उनको ब्रह्माण्ड की सारी हकीकत समझाकर उनके अन्दर जो अज्ञानता का अन्धकार है उसे मिटा दूंगी।

संसा सारा भान के, उड़ाऊं असत अंधेर।
निज बुध उठ बैठी हुई, गयो सो उलटो फेर।। १० ।।

सबके संशय मिटाकर झूठे ब्रह्माण्ड का अज्ञान समाप्त कर देंगे, फिर जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर उनकी उलटी माया वाली विचारधारा को सीधा करके अखण्ड धनी की पहचान करा देंगे।

अब फेर सब सीधा फिरे, सत आया सबों दृष्ट।
पेहेचान भई प्रकास थें, सुपन की जाहेर सृष्ट।। ११ ।।

अब सबको परब्रह्म की पहचान होने से सभी सच्चे सीधे रास्ते में अर्थात् झूठ की पूजा छोड़कर परब्रह्म की ही पूजा करेंगे। अब तारतम वाणी के प्रकाश से सपने की जीव सृष्टि को भी परब्रह्म की पहचान हो गई।

खेल देख्या कालमाया का, सो कालमाया में भिल।
अब देखो सुख जागनी, होसी निरमल दिल।। १२ ।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड का खेल कालमाया के तनों में ही मिलकर देखा। अब तारतम वाणी से जागृत होकर अपने निर्मल दिल से जागनी के सुख को देखो।

आवेस मुझपे पिया को, तिन भेली करूं सोहागिन।
सब सोहागिन मिल के, सुख लेसी मूल वतन।। १३ ।।

मेरे धनी का आवेश मेरे पास है जिससे सब ब्रह्मसृष्टियों को इकट्ठा करूंगी और सब ब्रह्मसृष्टियां मिलकर अपने मूल परमधाम के सुखों को लेंगी।

Nijanand App

विलास तब विध विध के, होसी हरख अपार।
करसी आनंद विनोद, आवसी सकुंडल सकुमार।। १४ ।।

उस समय तरह-तरह की आनन्द की लीला से बेशुमार आनन्द होगा। साकुण्डल और शाकुमार बाई जागृत होकर आएंगी तब खूब आनन्द मंगल होगा।

आए रहेसी सब सोहागनी, तब लेसी सुख अखंड।
पीछे तो जाहेर होएसी, तब उलटसी ब्रह्मांड।। १५ ।।

सभी ब्रह्मसृष्टियां जागृत हो जाएंगी तब अखण्ड सुख लेंगी। उसके बाद इस लीला की सब संसार को जानकारी हो जाएगी और तब ब्रह्माण्ड (प्रलय होकर) अखण्ड हो जाएगा।

हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर।। १६ ।।

अपने धनी के आवेश को सब सुन्दरसाथ को दूंगी, जिससे सबके मन की चाहना पूर्ण करके हंसते हुए अपने घर परमधाम मूल मिलावे में जागेंगे।

अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों।। १७ ।।

अब सुन्दरसाथ को मैं अकेला नहीं छोडूंगी और सुन्दरसाथ भी मुझे नहीं छोड़ेगा। मेरे कहने पर सुन्दरसाथ चलेगा और जो सुन्दरसाथ कहेगा, वह मैं करूंगी।

लेस है कालमाया को, बढ़्यो साथ में विकार।
सो गालूं सीतल नजरों, दे तारतम को खार।। १८ ।।

सुन्दरसाथ के अन्दर जो कालमाया की इच्छा है वही उनका विकार है, जिसे मैं अपनी शीतल नजर से तारतम वाणी के साबुन से साफ कर दूंगी।

विकार काढूं विधोगतें, बढ़ाए दया विस्तार।
भानूं भरम तिन भांतसों, ज्यों आल न आवे आकार।। १९ ।।

सुन्दरसाथ के विकार को मेहर का विस्तार (वाणी का ज्ञान) देकर अच्छी तरह से बाहर निकाल दूंगी। इनके संशय को अच्छी तरह से मिटा दूंगी, ताकि उन्हें किसी प्रकार से आलस्य न आवे।

सुख देऊं मूल वतन के, कोई रच के भला रंग।
मन वांछे मनोरथ, देऊं सुख सबों अंग।। २० ।।

परमधाम के सुख दूंगी तथा अच्छी-अच्छी वाणी का प्रसार करके सबकी मनचाही इच्छाओं को पूर्ण करके सब तरह का सुख दूंगी।

मोह बढ़्यो लेस माया को, निद्रा मूल विकार।
सुध होए सबों अंगों, कर देऊं तैसो विचार।। २१ ।।

मोह माया का असर बहुत बड़ा हुआ है। इसी विकार के कारण उनको अज्ञानता है। अब मैं ऐसी युक्ति लगाऊंगी जिससे सुन्दरसाथ को सब तरह से चेतना आ जाए।

Nijanand App

जोलों न काढ़ूं विकार, तोलों क्यों करके जगाए।
जागे बिना इन रास के, किन निज सुख लिए न जाए।। २२ ।।

जब तक सुन्दरसाथ के माया रूपी चाहनाओं के विकार को नहीं निकालूंगी, तब तक सुन्दरसाथ कैसे जागेगा? जब तक जागेंगे नहीं, तब तक इस अखण्ड आनन्द का सुख कोई नहीं ले सकेगा।

आमले उलटे मोह के, और मोह तो तिमर घोर।
ए घोर रैन टालूं या बिध, ज्यों सब कोई कहे भयो भोर।। २३ ।।

मोह माया के रास्ते उलटे हैं। मोह माया तो घोर अन्धकार है। इस घोर अन्धकार को तारतम वाणी से इस तरह से मिटा दूंगी जिससे सभी को ही ज्ञान का सवेरा हो जाए।

गुन पख अंग इन्द्री उलटे, करत हैं सब जोर।
सो सब टेढ़े टाल के, कर देऊं सीधे दोर।। २४ ।।

इस सांसारिक तनों के गुण पक्ष, अंग, इन्द्रिय तो सभी उल्टे माया की तरफ ही खींचते हैं। उन सबकी उल्टी माया वाली चाहना हटाकर सीधे रास्ते धनी के अखण्ड सुखों की चाहना में लगा दूंगी।

अहंकार मन चित्त बुध, इन किए सब जेर।
अब हारे सब जिताए के, फेरूं सो सुलटे फेर।। २५ ।।

संसार के तनों के अहंकार, मन, चित्त और बुद्धि को माया ने अपने अधीन कर रखा है। ऐसे हारे हुए सब अन्तःकरण को अपने बल से जिताकर सीधे रास्ते पर लगा दूंगी।

प्रकृत सबे पिंड की, सीधी करूं सनमुख।
दुख अगनी टाल के, देखाऊं ते अखंड सुख।। २६ ।।

इस शरीर की सभी प्रकृतियों को माया की तरफ से हटाकर परब्रह्म की तरफ सीधा कर दूंगी और तब इस दुःख की आग से हटाकर उनको अखण्ड सुख दूंगी।

चोर फेर करूं बोलावे, सुख सीतल करूं संसार।
अंग में सबों आनन्द, होसी हरख तुमे अपार।। २७ ।।

तन के इन सभी गुण, अंग, इन्द्रिय, आदि चोरों को सीधे रास्ते पर लाकर सारे संसार को सुखी और शीतल कर दूंगी। सबके अंग-अंग में आनन्द भर जाने से, सुन्दरसाथजी! आपको अपार आनन्द होगा।

कोईक दिन साथ मोह के जल में, लेहेर बिना पछटाने।
कहे महामती प्यारी मोहे वासना, न सहूं मुख करमाने।। २८ ।।

कुछ दिन तक तो सुन्दरसाथ माया के चक्कर में बिना पानी के डूबते रहे। अब महामतिजी कहती हैं कि मुझे सुन्दरसाथ प्यारे हैं। मैं उनके मुरझाए मुख को भी नहीं देख सकती।

॥ प्रकरण ॥ २१ ॥ चौपाई ॥ ५९८ ॥

हांसी का प्रकरण

मेरे साथ सनमंधी चेतियो, ए हांसी का है ठौर।
पिउ वतन आप भूल के, कहा देखत हो और।। १ ।।

मेरे परमधाम के सम्बन्धी सुन्दरसाथ! सावधान हो जाओ। यह हंसी का ठिकाना है। अपने धनी के अखण्ड घर को और अपने आप को भूलकर संसार में क्या देख रहे हो?

Nijanand App